Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 39-46

आधुनिक हिन्दी कविता में 'नई कविता काल' की कविताओं में लोकतात्विकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]सुधा मिश्रा, [2]डॉ.अजय कुमार शुक्ल
[1]शोधार्थी, [2]प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
[1,2]कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर(छत्तीसगढ़)
[2]ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

शोध सारांश-

साहित्य लोक का दस्तावेज है।अपने समय के जीवित यथार्थ की सजीव प्रस्तुति ही साहित्य को प्रासंगिक बनाती है। कोई भी जीवंत यथार्थ अपनी स्थानीयता की गहरी रंगत के बिना बेजान है ।सर्वमान्य तथ्य है कि कोई भी कविता सहृदय के दिल को तभी छूती है,पाठक या श्रोता को तभी भाती है,जब उस रचना में,उसे अपनी प्रकृति एवं अपने परिवेश की झलक दिखलाई पड़ती है।आधुनिक हिन्दी कविता में नयी कविता काल की कविताओं का केन्द्र उसकी लोकतात्विक प्रवृत्ति है।प्रस्तत शोधपत्र में नयी कविता के प्रतिनिधि कवियों की प्रमुख रचनाओं में लोकतात्विक प्रवृत्ति का विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द-

नयी कविता, लोकोन्मुखता, लोक संपृक्ति, लोक संवेदना,लोक परंपरा, लोक संस्कार,मिथक,लोक कथा एवं आधुनिकता।

शोध प्रविधि-

विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति, आलोचनात्मक अनुसंधान पद्धति, वर्णनात्मक अध्ययन एवं पुस्तकालय अनुसंधान पद्धति।

प्रस्तावना-

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रयोगवाद के बाद के समय को लगभग 1950 ई. के बाद लिखी गयी कविताओं को नयी कविता का नाम दिया गया है।अधिकांश विद्वानों का मत है प्रयोगवाद के भीतर से नई कविता का जन्म माना जाता है, "दूसरा सप्तक" के प्रकाशन से ही नयी कविता की चर्चा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 39-46

शुरू हो जाती है। जगदीश गुप्त की "नयी कविता" पत्रिका से इसे नयी गति मिलती है। नयी कविता में नये मनुष्य की प्रतिश्ठा पर बल दिया गया है। इस मनुष्य को "लघु मानव" कहा गया और 'सहज मानव भी। नयी कविता इसी मध्यवर्गीय साधारण मनुष्य की आशा और निराशा, आस्था और अनास्था, अकेलेपन की पीड़ा और टूट-फूट को व्यक्त करती है।नयी कविता में लोकचेतना का स्वर महत्वपूर्ण है।नयी कविता में प्रकृति, परिवार एवं आस पास की चीजों कै कविता के केन्द्र में रखा गया है।यहाँ के अधिकांश कवियों की रचनाओं में लोक संवेदना की गहरी पैठ दिखलाई पड़ती है।

1.1 नयी कविता और लोकतात्विकता -

वास्तव में नयी कविता सामाजिक आशय की कविता है। मध्यवर्गीय चेतना तथा सामान्य मनुष्य के संकल्प इसके स्वर बने। नई कविता में यथार्थ बोध सघन है। नयी कविता अनुभूतिपरकता और प्रकृति के नये संदर्भों की ओर ही नहीं, बल्कि खासतौर से प्रतीकों और बिंबों, छंद और लय और अर्थ की लय की तरफ ध्यान खींचती है। एक ओर गद्‌यात्मकता की प्रवृत्ति इसमें दिखती है तो दूसरी तरफ लय का संगीत सुनायी पड़ता है। इस काव्यधारा में "दूसरा सप्तक" के कवि रघुवीर सहाय, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता ही नहीं बल्कि तारसप्तक के कवि मुक्तिबोध, अज्ञेय, आदि के साथ "तीसरा सप्तक" के कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह और "नयी कविता" पत्रिका के संपादक जगदीश गुप्त, लक्ष्मीकांत वर्मा और श्रीकांत वर्मा आदि के नाम भी सम्मिलित हैं। जिसमें अधिकांश कवियों में लोक संवेदना की गहरी पैठ है।

1.2 नयी कविता और लोक संपृक्ति

डॉ. नगेन्द्र के द्‌वारा संपादित "हिन्दी साहित्य के इतिहास के अनुसार "लोक संपृक्ति" नयी कविता की खास विशेषता है। वह सहज लोक-जीवन के करीब पहुंचने का प्रयत्न करती है। लोक जीवन के प्रति उसकी उन्मुखता प्रगतिवाद का प्रभाव कही जा सकती है किन्तु प्रगतिवाद में एक आंदोलन का स्वर था, सहजता नहीं थी और उसने अपने विशिष्ट दृष्टिकोण के कारण लोक जीवन का एक विशिष्ट अर्थ लगा लिया था। प्रयोगवाद लोक जीवन से कट गया था। जबकि नयी कविता ने लोक जीवन की अनुभूति, सौंदर्य बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि

पर ग्रहण किया साथ ही साथ लोक जीवन के बिम्बों प्रतीकों शब्दों और उपमानों को लोक जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्याधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया।" (1)

नयी कविता लोक जीवन के सिर्फ सतही भावनाओं का इतिवृत्त नहीं दिखलाती है बल्कि लोक जीवन में लिये गये बिम्बों के माध्यम से लोक जीवन की जटिल अनुभूतियों और प्रश्नों को ध्वनित करती है। यहाँ पर लोक जीवन से लिये गये शब्दों को ठूंसा नहीं गया है बल्कि सशक्त भाव अनुभूति और मिट्टी की सोंधी सुगंध वाले सशक्त शब्दों का प्रयोग है। नयी कविता ने सभी प्रकार के संदर्भों के लिये लोक शब्द चुने हैं। इन लोक शब्दों के माध्यम से लोक की आंतरिक चेतना को कविता में अभिव्यक्त किया गया है-

"पहाड़ियों से घिरी हुई। इस छोटी सी घाटी में ये मुँह झौंसी चिमनियां बराबर। धुआं उगलती जाती हैं।" (2) मेरा कर्म। मेरे गले का जुआं नहीं। वह जोती हुई भूमि बन जाए जिसमें मुझे नया बीज बोना है।" (3)

इसी प्रकार मुक्तिबोध अपनी कविता "मीठा बेर" में फ्लैशलाईट अर्थात् कविता के नये सौंदर्य विधान, जो दूर स्थित देशों से मंगाई गई है।उस पर कटाक्ष करते हैं कि ये बाहरी सौंदर्य-विधान यहाँ के जन जीवन की उपेक्षा करते हैं इसलिये इनका रोब दाब यहीं पर नष्ट हो जायेगा। इसका कोई प्रभाव जनजीवन पर नहीं हो सकता। इन कवियों के अनुभव हमारे देश के जातीय अनुभवों से संबद्ध नहीं है। हमारे सौंदर्य के लोकानुभव इसके ठीक विपरीत हैं जिसे वह "जंगली कंटीला और व्यक्ति विहीन 'मीठा बेरझाड़' के लोक प्रतीक से व्यक्त करते हैं। जो सौंदर्य का लोकविन्यास इस प्रकार से करता है-

"....... राह पर। खड़ा एक। जंगली व कंटीला, व्यक्तित्वहीन मीठा बेर झाड़ हूँ मैं। पत्थर मार-मार कर मुझे खाया गया है। मुझे तोड़ा गया है क्रूरता से। और मेरे बेरों को। बच्चों ने, राहगीरों ने, बूढ़ों ने, स्त्रियों ने। बहुत-बहुत पसंद किया है। मुझे निजत्व प्रकाशन हित । फ्लैश लाईटों व मेघों व व्योम की जरूरत ही नहीं है !! स्वयं का प्रकाशन नहीं करता। मैं तो सिर्फ फैलता हूँ बहता हूँ खून में।। क्योंकि मैं एक बेर का झाड़ हूँ। जंगली और कंटीला। किन्तु मीठा !!" (4)

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 39-46

मुक्तिबोध 'बेर के बाहरी स्वरूप को 'जंगली व कंटीला" कहने के बावजूद उसके आंतरिक सौंदर्य को 'मीठा' कहते हैं। उसमें चमक-दमक नहीं है। 'बेर उत्पीड़न से भलीभांति परिचित हैं,। जीवन की कठिनाईयों का भी उसका निकट का अनुभव है। जो कंटीला होने पर भी मन से साफ है। मनुष्य के रक्त में फैलता है। बेर के लोक प्रतीक माध्यम से वह फ्लैशलाईट के बाह्य प्रतीक को महत्वपूर्ण नहीं मानते है।

मुक्तिबोध अपनी रचनाओं में मध्यवर्ग के परिवेश को केन्द्रीय स्थान में रखते हैं और उसके भीतर एवं बाहर की बहस के लिये पात्रों की योजना करते हैं। जिसमें मध्यवर्ग अपनी वास्तविकता को समझता हुआ उस जमीन को देख सके जिस पर कि वह खड़ा है या उसे खड़ा होना चाहिये फिर भी उनकी कविता यहीं तक सीमित नहीं है। ये इस मुख्य विषय से इधर-उधर उन स्थानों तक पहुंचते हैं, जहाँ उनका मन रमता है यही उनकी कविता का लोकपक्ष है।जिसे वे जन की ऊष्मा, प्रयासी प्रेरणा के स्त्रोत सक्रिय वेदना की ज्योति महत् संभावनाओं की उजली एक रेखा न जाने कितने नाम देते हैं। "चकमक का चिनगारियां 'कविता से उनकी लोकबद्धता को प्रमाणित ये पंक्तियां करती हैं-

"अरे! जन-संग ऊष्मा के। बिना, व्यक्तित्व के स्तर जुड़ नहीं सकते, प्रयासी प्रेरणा के स्त्रोत। सक्रिय वेदना की ज्योति। सब साहाय्य उनसे लो। तुम्हारी मुक्ति उनके प्रेम से होगी। कि सद्गत लक्ष्य में से ही। हृदय के नेत्र जागेंगे, वह जीवन लक्ष्य उनके प्राप्त। करने की क्रिया में से। उभर उभर विकसते जायेंगे निज के। तुम्हारे गुण। कि अपनी मुक्ति के रास्ते। अकेले में नहीं मिलते। (5)

विदित है कि उनकी कविताओं के केन्द्र में मध्यवर्ग है। उसके माध्यम से आज के समाज और मनुष्य के सामने फैले हुए अंधेरे की उलझनों को स्पष्ट करते हैं। वे जन कलारूप अपनाने के स्थान पर उन्ही परिष्कृत कलारूपों का सहारा लेते हैं जिन्हें कि कविता के संस्कार वाला मध्यवर्गीय पाठक मान्यता देता है। इसके बावजूद लोकहृदय की धड़कनों का ऊंचा स्वर उनकी काव्यालोचना में दिखलायी पड़ता है। "चांद का मुँह टेढ़ा है" तथा "भूरी-भूरी खाक-धूल" दोनों संग्रहों में जीवन के ऐसे अनेक प्रमाण हैं जो मुक्तिबोध की जनोन्मुखता के स्वरूप को उद्घाटित करते हैं।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 39-46

1.3 नयी कविता और लोकचेतना

इसी क्रम में केदारनाथ अग्रवाल जी नयी कविता को लोक रूपता प्रदान करते हैं।जो प्रगति-प्रयोगवाद के दौर से विकसित होती आयी है। लोकजीवन में किसान-मजदूरों का लोक उल्लास की कविता और प्रकृति का मानवीयकरण आदि से उनकी कविता लोकतात्विक गुणों से परिपुष्ट है। प्रकृति-चित्रण में केदार जी ने सौंदर्य के उन समस्त पहलुओं को संयोजित किया है जो मानव जीवन को सहज उल्लास प्रदान करते हैं। उनकी कविताओं में लोकजीवन की लोकपरंपराओं की और लोक प्रतीकों को प्रकृति के माध्यम से सुन्दर चित्र प्रस्तुत है-

"धूप चमकती है चांदी की साड़ी पहने। मैके में आई बेटी की तरह मगन है। फूली सरसों की छाती से लिपट गयी है। जैसे दो हमजोली सखियां गले मिली हैं। भैया की बांहों से छूटी भौजाई-सी। लहंगे सी लहराती चलती हवा चली है। सारंगी बजती है खेतों की गोदी में। दल के दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के।" (6)

केदार की कविता की सबसे बड़ी विशिष्टता है, उसकी लोकतात्विकता। वह अपने ग्राम, अंचल और उसके संस्कारों से जुड़े हैं। वह लोक से गहरा जुड़ाव रखते हैं।हताशा और निराशा से आबद्ध गाँव और गाँव के लोग भी उनकी नजरों से नहीं बच पाता-

"गाँव बनने में। शताब्दियां लगभग लग गयी होंगी। बड़े होने में। निकल न आया होगा। कोई चिरौटा अण्डा तोड़कर। शोषण की नयी सरणियों के बीच। दिल्ली से दूर, पीड़ित अपमानित और त्रस्त वही गाँव। आज जी रहा है मेरा गाँव-कमसिन । टिमटिमाती हुई लालटेन की तरह।" (7)

1.4 नयी कविता और लोक सौंदर्य

इसी प्रकार नयी कविता के कवियों में शमशेर बहादुर सिंह का नाम भी महत्वपूर्ण है। वह कविता में किसी फार्म, शैली या विषय का सीमाबंधन स्वीकार नहीं करते।उनकी अपनी एक अलग शैली है। यात्राओं के बीच गुजरते बनते जीवनानुभवों को वे अपनी धरती के भूगोल का रूप देते जीवन के संधान में लीन दिखायी पड़ते हैं, जीवन के सच्चे सौंदर्य ने उनकी कविता को भी कितना सहज और सुंदर बना दिया है-

"दिखी मालव-गीत की वह सुधर गोरी / बाजरे का खेत, शुभ मचान / धनुषाकार गोपा / गोफने में भरे मालव गीत, गा/ सुग्गे उड़ाती ।" (8)

1.5 नयी कविता और लोक परंपरा

नयी कविता के प्रगतिवाद कवि नागार्जुन और त्रिलोचन भी नये परिदृश्य में उतने ही प्रतिष्ठित है। और इस दौर में भी घर-परिवार परंपरा-संस्कार को नये भाव-बोध के साथ व्यक्त कर रहे हैं।उनकी कविताओं में जाने-पहचाने लोक परिवेश का स्वर गुंजायमान हो उठता है।-

"जी तरसता है। बार-बार तरसकर रह जाता है। घर के लोग भुने हुए चने चाबते हैं। चाबते हैं चावल भुने हुए...। अपन तो बस सत्तू ही सत्तू। माफिक आता है। कमजोर दांतों वाला बुढ़ापा। तुझे लानत है। जय हो तेरी ।" (9)

"नये युग के उगदाता। वे हैं जो निपट निरक्षर लेकिन जिनकी। प्राणों की तलवार जानती कभी न रूकना। जिनका आहत मान जानता नेक न झुकना। स्पष्ट रूपरेखा है उनको अपने दिन की। क्रांति उन्हीं लोगों के पास पला करती है। दुःख के तम में जीवन ज्योति जला करती है।" (10)

1.6 नयी कविता और लोक संस्कार

इसी प्रकार केदारनाथ सिंह की कविताओं में लोकतत्व पूरे वैभव के साथ आता है केदार अपने परंपरागत किसानी संस्कार को परिष्कृत करते गये हैं जमीन से और अपनी जमीन से जुड़ी हुई चीजों से उनका प्रगाढ़ रिश्ता है। इसीलिये तमाम अमानवीय स्थितियों के बावजूद उन्हें अपनी धरती से और धरती से जुड़ी हुई सकारात्मक पक्ष को नश्वरता पर कोई संदेह नहीं है-

"मुझे विश्वास है। यह पृथ्वी रहेगी। यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में यह रहेगी जैसे पेड़ के तने में। रहते हैं दीमक। जैसे दाने में रह लेता है घुन। यह रहेगी प्रलय के बाद भी मेरे अंदर। यदि और कहीं नहीं तो मेरी जबान और मेरी नश्वरता में। यह रहेगी।" (11)

1.7 नयी कविता और मिथक-लोककथा

बदलते समय, जीवन मूल्यों में जीवन कठिन होता जाता है। अमानवीय शक्तियां पूरे विश्व परिदृश्य पर अपना प्रभाव दिखला रही हैं। स्थितियां निर्मम, निष्करूण, नृशंस हो गयी हैं। मानवीय संबंधो में लड़खड़ाहट है। मनुष्य की कोमल मानवीय संवेदना की, मानवता की रक्षा कैसे हो यह कविता की मुख्य चिंता हैं पुरातन लोक प्रतीकों के माध्यम से नयी कविता के कवियों ने अपने समय संदर्भ

में उन स्थितियों को परखा है। जिनमें धर्मवीर भारती का "अंधायुग" कुंवरनारायण का "आत्मजयी" और नरेश मेहता का "संशय की एक रात" का नाम विशेष उल्लेखनीय है "अंधा युग" में धर्मवीर भारती कौरव पांडव संघर्ष की नयी व्याख्या करते हैं-

"टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा। उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है। पांडव ने कुछ कम कौरव ने कुछ ज्यादा। यह रक्तपात अब कब समाप्त होता है। क्या अजब युद्ध है। नहीं किसी की भी जय। दोनों पक्षों को खोना ही खोना है। अंधों के शोभित था युग का सिंहासन। दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा। दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन। भय का अंधापन। ममता का अंधापन । अधिकारों का अंधापन जीत गया। जो कुछ सुंदर था, शुभ था, कोमलतम था। वह हार गया. द्वापर युग बीत गया।" (12)

इसी प्रकार कुंवरनारायण का 'आत्मजयी "कठोपनिषद्" के नचिकेता प्रसंग पर आधारित है जिसमें 'बाजश्रवा' एक प्रकार से वहरे हुए मूल्य की वाहक पीढ़ी का प्रतीक है जबकि नचिकेता प्रबुद्ध नयी चेतना का प्रतीक है। आत्मजयी में आधुनिक जीवन के संदर्भों पर लेकर उन पर व्यक्त किये गये विचारों की श्रृंखला को काव्य में समाहित किया गया है। कवि भारतीय जीवन और दर्शन से आधुनिक बोध का परिचय देता है, वहीं लोक प्रतीक के माध्यम से जीवन का एक बोध उभारते हैं। इसी क्रम में नरेश मेहता कृत "संशय की एक रात में राम के मन के संशय को चित्रित करते हैं। समुद्र पर पुल बांधने, लंका जाने और युद्ध में भीषण नरसंहार की कल्पना से वह संशित है लेकिन अंततः वह इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि युद्ध सीता के लिये नहीं बल्कि प्रजा के लिये हो। असत्य पर सत्य और अन्याय पर न्याय की जीत के लिये हो। राम के लोकप्रतीक के माध्यम से राम का लोक मनोहारी रूप को आधुनिक संदर्भ बोध में उभारते हैं।

नयी कविता में बहुत सारे कवि अपने लोक परिवेश, लोक परंपराओं और लोक संस्कार को व्यक्त करते हुये कविता की लोकतात्विक परंपरा को पुष्ट करते हैं। नयी कविता के कवि लोकजीवन के बहुआयामी संकेतों को अत्यंत सहजता से अपनाते रहे हैं। यहाँ की कविताओं में लोक जीवन को देखने का एक अलग और नया अंदाज था जहाँ रोजमर्रा के साधारण सी दिखने वाली चीजें और साधारण से भाव पर भी कविताएँ लिखी गयी। यह काव्यधारा भी लोकतात्विक प्रवृत्तियों से लगातार पुष्ट होती रही है।

निष्कर्ष - उक्त तथ्यों के विश्लेण के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता नयी कविता से लगातार प्रभावित होती रही है। दरअसल प्रगतिवाद, प्रयोगवाद नयी कविता

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 39-46

एक दूसरे की प्रतिक्रिया है। समय के साथ विचार और सिद्धांत के कारण वाद का नाम परिवर्तन हुआ लेकिन इन पीढ़ियों के कवि आधुनिक कविता से जुड़े हुए हैं और उसके लोकतात्विक स्वरूप को समृद्ध करने में लगे हुए हैं। अतएव यह कहा जाना उचित होगा कि आधुनिक हिन्दी कविता ने नयी कविता के लोकतात्विक प्रभाव को ग्रहण किया है और उसे अपने कविताओं में और वैभव के साथ अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ-

01. डॉ. नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास /मयूर बैक पब्लिकेशन/ पृ. 633

02. अज्ञेय-अंतरा/लोकभारती प्रकाशन/पृ. 43

03. अज्ञेय बाबरा अहेरी/लोकभारती प्रकाशन/पृ. 39

04. मुक्तिबोध मीठा बेर / कविता की लोक प्रकृति/अनामिका प्रकाशन/पृ. 102

05. मुक्तिबोध-चकमक की चिंगारियों/मुक्तिबोध की कविताएँ/साहित्य अकादमी/सं.त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 97

06. केदारनाथ अग्रवाल धूप/आकृति 06(पत्रिका)/पृ. 26

07. केदारनाथ अग्रवाल - कविता की लोक प्रकृति (सं. जीवन सिंह) /अनामिका प्रकाशन/ पृ. 53

08. शमशेर बहादुर सिंह - कविता की लोक प्रकृति (सं. जीवन सिंह) / अनामिका प्रकाशन/पृ. 55

09. नागार्जुन - अपना घर / भूल जाओ पुराने सपने / पृ. 83

10. त्रिलाचेन -"दिगन्त" काव्य संग्रह से संकलित / पृ. 43

11. केदारनाथ सिंह- पृथ्वी रहेगी। जनपथ 2/3/47

12. धर्मवीर भारती 'अंधायुग' से (अक्षरा-43/ जनवरी-मार्च 1999, पृ. 90